RNI No. 43038/1985 Postal Reg. No.: DL(C)-14/1434/2021-23, Posting Date: 28 & 29 of the Same Month

मूल्य: 10 रुपये

नेजाजी की जुबानी

कोई व्यक्ति एक विचार पर सर्वस्व न्योछावर करता है तो उसके मृत्यु के बाद वह विचार हजारों जीवन के रूप में अवतरित हो जाएगा।

जन गर्जन

वर्ष 38 अंक 3 हिन्दी मासिक नई दिल्ली मार्च–2023 विक्रमी संवत्–2078 प्रधान संपादक: देवब्रत बिश्वास, वार्षिक – शुल्क: 100 रुपये

सुभाषवाद भविष्य है

ऑल इंडिया फरवर्ड ब्लॉक की 19वीं पार्टी महासम्मेलन हैदराबाद में 23 से 26 फरवरी 2023 तक सफलतापूर्वक संपन्न हुई, जिसमें दिवंगत हुई प्रतिभाओं और क्रांतिकारी नेताओं को श्रद्धांजलि दी गई। जैसे ही ऐतिहासिक हैदराबाद के पश्चिमी क्षितिज पर सूरज अस्त हुआ, फरवर्ड ब्लॉक के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू हो रहा था। सुंदरैया विज्ञान केंद्रम के सभागार में जब 'सुभाषवाद भारत का भविष्य है' का नारा गूंजा तो दुनिया भर में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के अनुयायियों का दिल खुशी और उम्मीद से झूम उठा।

23 फरवरी की सुबह फरवर्ड ब्लॉक के नेता पार्टी के महासचिव देवव्रत विश्वास ने सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन के सामने स्थित नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। बाद में कॉम देवव्रत विश्वास ने कांग्रेस के आयोजन स्थल के सामने पार्टी का झंडा फहराया। एआईएफबी के नेताओं ने शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित की।

दोपहर तीन बजे से वाम दल के नेताओं का विशेष सत्र शुरू

हुआ। शुरुआत में कॉम. देवव्रत विश्वास ने मंच पर रखी नेताजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। कॉम. देवव्रत विश्वास ने प्रारंभिक संबोधन किया। प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कॉम विश्वास ने भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों की जमकर आलोचना की और कहा कि 2024 के आगामी चुनाव में भाजपा की हार सुनिश्चित करने के लिए वामपंथी और लोकतांत्रिक ताकतों को एकजुट होना चाहिए। वाम दलों के नेताओं ने प्रतिनिधियों को संबोधित किया और एक स्वर में कहा कि जो भी हो संसद में लेफ्ट पार्टियों की ताकत और लेफ्ट पार्टियों की साख अभी भी बरकरार है। इसलिए इस विश्वसनीयता का उपयोग अन्य वामपंथी धर्मनिरपेक्ष ताकतों को एक साथ लोगों का विकल्प बनाने के लिए

शेष पेज 2 पर...

अलगाववादी आंदोलन को झेलना संभव नहीं

संपादकीय

अब और अधिक किसी भी अलगाववादी आंदोलन को झेलने की परिस्थिति में देश नहीं है। खालिस्तान आंदोलन एक सिख अलगाववादी आंदोलन रहा है जिसका लक्ष्य सिखों के लिए संप्रभु, राज्य खालिस्तान बनाने का रहा है। हम, भारत के लोग या भारत सरकार कत्तई एक स्वतंत्र खालिस्तान के विचार को नहीं झेल सकते। हमारा दृढ़ मत है कि भारत एक पंथनिरपेक्ष लोकतंत्र है जहां सिखों के लिए एक अलग राज्य (देश) की स्थापना भारत के क्षेत्रीय एकीकरण का खुला उल्लंघन होगा और भारत की सम्प्रभुता का स्पष्ट तौर पर अपमान होगा। यह एक संवेदनशील विषय है तथा देश की शांति–व्यवस्था को प्रभावकारी तरीके से आहत करने की क्षमता रखता है।

खालिस्तान निर्माण रूपी जुनूनी सोच या ख्याली पुलाव जैसे विचार को परास्त हुए तीन दशकों से भी अधिक का समय व्यतीत हो चुका है, परन्तु एक बार पुनः प्रवासी सिख समुदाय के अल्प समूह का समर्थन पाकर सुगबुगाहट बढ़ रही है। राज्य की जनता समझदार है और ऐसे जुनूनी सोच में डूब कर अपनी तबाही नहीं करवाना चाहती है।

खालिस्तानी कार्यकर्ता सक्रिय हैं और भारतीय ध्वज की अवमानना की घटना प्रकाश में आई है। ऐसा भारतीय राजनैतिक मिशनों पर तोड़–फोड़ के साथ घटित हुआ। प्रवासी सिख समाज का छोटा भाग ऐसे ख्यालों को हवा दे रहा है। पंजाब के अंदर ऐसे विचारों को शह नहीं मिल रही है जबकि पंजाब अनेक बड़े समस्याओं को झेल रहा है। वहां कृषि एवं कृषि जन्य अनेक गंभीर समस्याएं हैं। पंजाब बेरोजगारी व रोजगार सृजन के अभाव को झेल रहा है। पंजाब में भूमि धारण क्षमता घटती जा रही है। ऐसी अनेक परेशानियां है पर लोग शांति एवं सार्थक विकास चाहते हैं। नशे (शराब) व अन्य मादक द्रव्यों के प्रसार से लोग तंग हैं फिर भी धैर्य पूर्वक परिवर्तन चाहते है तथा ऐसे किसी अलगाववादी धारणा से बचना चहते हैं। पिछला कटु अनुभव लोगों को याद है। उपर्युक्त वर्णित समस्याओं में से किसी भी समस्या का उत्तर खालिस्तान के पास नहीं है। सीमा पार से आतंक व आतंकवादियों को हवा देने में पाकिस्तान तैयार रहता है। राज्य की मेहनती जनता पुराने दहशत भरे दौर की पुनरावृत्ति नहीं करना चाहती है। 1980 के दशक में उभरा आतंक 1990 के दशक के मध्य तक चला था। सिख आतंकवादियों को आईएसआई (पाकिस्तान) का सहयोग मिल रहा था। पंजाब के आम जन और विशेष रूप से युवा वर्ग ने इस हिंसा की भारी कीमत चुकाई थी। लोग उन खौफनाक मंजरों और दौरों को नहीं भूले हैं।

अकस्मात वारिस पंजाब दे का उदय होना तथा इसके प्रमुख के रूप में स्वघोषित मुखिया अमृतपाल समस्या बना हुआ है। लंदन में भरतीय दूतावास पर लगे भारतीय ध्वज (तिरंगे) को हटाकर खालिस्तानी ध्वज लगाए जाने की घटना सामने आई है। सेन फ्रान्सिस्को स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास पर तोड़फोड़ की गई। कनाडा में इस कदर विरोध प्रदर्शन हुआ कि भारतीय दूत द्वारा कार्यक्रम में सहभागिता का कार्य सुरक्षा कारणों से छोड़ना पड़ा। खालिस्तानी समस्या और उसकी गतिविधियां चिंता का कारण बनी हैं।

सिख प्रवासी समुदाय अच्छी संख्या में विदेशों में हैं जिनमें से अधिकांश ऐसे जुनूनी ख्यालातों से परहेज करते हैं परन्तु अल्प समूह ऐसा है जो इस समस्या को सुलगा रहा है जो राजनैतिक रूप से वर्षों पूर्व पराजित कर दी गई है। सिख समाज परिस्थितियों से अवगत है।

यह सर्वथा उचित है कि भारत सरकार ने विदेशों में सक्रिय ऐसे लोगों या समूह विशेष के खिलाफ कार्यवाही करने की मांग कर रहा है। आज अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन में बहु सांस्कृतिक परिपक्व लोकतंत्र कार्यरत है जिनसे उम्मीद की जा सकती है कि वे ऐसे अलगाववादियों और उनके कुचक्रों के विरूद्ध कार्यवाही करेंगे। भारत–विरोधी सुरों के विरूद्ध सक्रिय होंगे।

अमृतपाल की खोज अन्य राज्यों तक की जा रही है। भारत–पाक सीमा पार कर या नेपाल में प्रवेश कर वह भाग सकता है। आज पंजाब की जनता ऐसे अलगाववादी विचारों को कुचलने के लिए तैयार है। परन्तु आज उतना ही आवश्यक है कि राजनेता अपनी जिम्मेदारी समझें और संवेदनशील होकर राज्य की समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न सजगता पूर्वक करें।

सुभाषवाद भविष्य...

पेज 1 से जारी...

एकजुट करने के लिए किया जाना है।

माकपा पोलित ब्यूरो सदस्य और पूर्व सांसद सुभाषिनी अली, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय सचिव डा. के. नारायण, आरएसपी सचिव एन.के. प्रेमचंद्रन एम.पी. और भाकपा (माले) के सचिव एन.मूर्ति ने वामपंथी दलों के सत्र को संबोधित किया।

इस विशेष सत्र के बाद पार्टी महासम्मेलन का पहला प्रतिनिधि सत्र शुरू हुआ। पार्टी के केंद्रीय सेक्रेटेरिएट ने सत्रों के प्रेसीडियम के रूप में कार्य किया। कॉम. (डा) असीम सिन्हा, कॉम. टी. मनोज कुमार, कॉम. ज्ञानेश्वर खोमद्रोम, कॉम. अमेरिका महतो और कॉम. संजय भट्टाचार्य को मिनट कमेटी के रूप में चुना गया। कॉम. जी. आर. शिवशंकर, कॉम.डोली राय, कम. आर. तिरुपति को क्रेडेंशियल रिपोर्ट कमेटी के रूप में चुना गया है। कॉम. जी. देवराजन ने शोक प्रस्ताव रखा। दिवंगत नेताओं के सम्मान में प्रतिनिधियों ने दो मिनट का मौन रखा। कॉम. देवव्रत विश्वास ने राजनीतिक प्रस्तावों का मसौदा और संगठनात्मक रिपोर्ट को रखा। यह सत्र शाम 7.30 बजे समाप्त हुआ।

24 फरवरी को प्रातः प्रतिनिधि सत्र प्रातः 9.00 बजे प्रारंभ हुआ। विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों ने महासचिव द्वारा रखे गए प्रतिवेदन और प्रस्तावों पर अपनी राय और सुझाव देना शुरू किया। विदेशी बिरादराना प्रतिनिधियों के साथ विशेष सत्र पूर्वाह्न 11.00 बजे शुरू हुआ। श्री चेन जियानजुन और कोउ काई (चीन की कम्युनिस्ट पार्टी), श्री न्गुयेन थान है (वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी), सुश्री रोजस मदीना मैलेना (क्यूबा की कम्युनिस्ट पार्टी), श्री छोले हुई चोल और श्री किम म्योंग चोल (वर्कर्स पार्टी अफ कोरिया), श्री उदय राज पांडे और श्री युवराज बस्कोटा (नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी यूएमएल), श्री बिमल रत्नायके (पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट अफ श्रीलंका), श्री वनमनी बाउमी (लाओ पीपुल्स रिवोल्यूशनरी पार्टी), श्री दिबालोक सिंह और श्री अशरफुल आलम (बांग्लादेश की कम्युनिस्ट पार्टी), श्री सैफुल हक और सुश्री बहनिका जमाली (बांग्लादेश की क्रांतिकारी कार्यकर्ता पार्टी) ने पार्टी कांग्रेस के प्रतिनिधि सत्र को संबोधित किया। अलग–अलग कम्युनिस्टों और सोशलिस्ट पार्टियों के वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि दुनिया भर में पूँजीवादी षड़यंत्रों के शोषण के खिलाफ समाजवादी आंदोलन को मजबूत किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ कॉरपोरेट्स आम लोगों की कीमत पर विश्व संपत्ति के बड़े हिस्से को नियंत्रित कर रहे हैं। दुनिया भर में सत्ताधारी गुटों के गुप्त और प्रत्यक्ष समर्थन से कॉरपोरेट धन अर्जित कर रहे हैं। कॉरपोरेट अब कई सरकारों को नियंत्रित कर रहे हैं और यहां तक कि महामारी की स्थितियों का भी लाभ उठा रहे हैं। प्रेसीडियम की ओर से सत्र का संचालन कॉम. जी. देवराजन ने किया। केंद्रीय सेक्रेटेरिएट के सदस्यों और अग्रगामी महिला समिति की नेताओं द्वारा बिरादराना प्रतिनिधियों का अभिनंदन किया गया।

प्रतिनिधि सत्र 25 फरवरी रात्रि 8.00 बजे तक जारी रहा। 26 फरवरी को सुबह 9 बजे समापन सत्र का आयोजन किया गया। क्रेडेंशियल कमेटी के संयोजक कॉम. जी आर शिवशंकर ने प्रतिनिधियों की क्रेडेंशियल रिपोर्ट रखी। कॉम. देवव्रत विश्वास ने विभिन्न राजनीतिक प्रस्तावों और संगठनात्मक मुद्दों पर प्रतिनिधियों द्वारा मांगे गए स्पष्टीकरण और सुझावों के बारे में बताया। उनके द्वारा व्याख्या किए जाने के बाद सुझावों को स्वीकृत किया गया। 8 और 9 अप्रैल 2022 को भुवनेश्वर में आयोजित राष्ट्रीय परिषद की बैठक द्वारा अपनाए गए संवैधानिक संशोधनों को भी पार्टी कांग्रेस के समक्ष रखा गया और प्रतिनिधियों द्वारा अनुमोदित किया गया।

19 राज्यों के 404 प्रतिनिधियों ने भाग लिया है। चर्चा में विभिन्न राज्यों के 84 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

पार्टी महासम्मेलन ने जोरदार ढंग से संकल्प लिया है कि जब अन्य सभी 'वाद' भारत के बुनियादी मुद्दों को हल करने में बुरी तरह विफल रहे हैं, तो नेताजी सुभाष चंद्र बोस के सामाजिक –राजनीतिक–आर्थिक आदर्शों पर फिर से विचार करने का समय आ गया है। इसलिए, सिंहनाद है 'सुभासवाद भविष्य है'।

फॉरवर्ड ब्लॉक के लिए नया नेतृत्व

कॉम. नरेन चटर्जी

कॉम. जी देवराजन

अखिल भारतीय फॉरवर्ड ब्लॉक में एक नए इतिहास की शुरुआत हो रही है। 19वें पार्टी महासम्मेलन ने अप्रैल 2022 में भुवनेश्वर में आयोजित राष्ट्रीय परिषद की बैठक में संशोधित पार्टी संविधान के अनुसार एक नई केंद्रीय कमेटी का चुनाव किया है। ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक की नवनिर्वाचित केंद्रीय कमेटी

अध्यक्ष :
नरेन चटर्जी (पश्चिम बंगाल)

उपाध्यक्ष :
पी.वी. काथिरावन (तमिलनाडु)

महासचिव :
जी देवराजन (केरल)

वित्त सचिव :
डा.असीम सिन्हा (पश्चिम बंगाल)

सचिव
: जी.आर. शिवशंकर (कर्नाटक)
: गोबिंद राय (पश्चिम बंगाल)
: (एमएस) डोली राय (पश्चिम बंगाल)
: बिवास चक्रवर्ती (पश्चिम बंगाल)
: ज्योति रंजन महापात्रा (ओडिशा)
: बांदा सुरेंद्र रेड्डी (तेलंगाना)
: अमरेश कुमार (बिहार)
: मिहिर नंदी (असम)
: संजय भट्टाचार्य (उत्तर प्रदेश)

कॉम. पी.वी. काथिरावन

कॉम. जी.आर. शिवशंकर

कॉम. गोबिंद राय

कॉम. डा.असीम सिन्हा

कॉम. बांदा सुरेंद्र रेड्डी

कॉम. ज्योति रंजन महापात्रा

कॉम. अमरेश कुमार

कॉम. डोली राय

कॉम. बिवास चक्रवर्ती

कॉम. मिहिर नंदी

कॉम. संजय भट्टाचार्य

सदस्यों

: पूर्ण चंद्र पाधी (ओडिशा)
: मोफिज शाहिल (झारखंड)
: अरुण मंडल (झारखंड)
: अमेरिका महतो (बिहार)
: ओम वीर सिंह (उत्तर प्रदेश)
: उदयनाथ सिंह (उत्तर प्रदेश)
: धर्मेंद्र कुमार (दिल्ली)
: अरुण सिंह (मध्य प्रदेश)
: जगन जाधव (पंजाब)
: किशोर करदक (महाराष्ट्र)
: सतीश राव शिर्के (महाराष्ट्र)
: पांडियन (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह)
: एमजेड अली (कर्नाटक)
: टी. मनोज कुमार (केरल)
: कलाथिल विजयन (केरल)
: बी. राजेंद्रन नायर (केरल)
: पी.वी. सुंदर रामाराजू (आंध्र प्रदेश)
: ए.ए. रामाराजू (आंध्र प्रदेश)
: जोजी रेड्डी (तेलंगाना)
: आर.वी. प्रसाद (तेलंगाना)
: तेजदीप रेड्डी (तेलंगाना)
: एस कर्णन (तमिलनाडु)
: आर. थिरुपथी (तमिलनाडु)
: नल्ला मुथु (तमिलनाडु)
: ज्ञानेश्वर खोमद्रोम (मणिपुर)
: हरेन बोर्गोहेन (असम)
: रघुनाथ सरकार (त्रिपुरा)
: परेश सरकार (त्रिपुरा)
: शाहिद मंजूर (कश्मीर)
: जीबन प्रकाश साहा (पश्चिम बंगाल)
: अक्षय ठाकुर (,,)
: संजीब चटर्जी (,,)
: दीपक चटर्जी (,,)
: श्रीमंत मित्रा (,,)
: पूर्णिमा विश्वास (,,)
: डा. जगन्नाथ भट्टाचार्य (,,)
: इंद्रजीत सिन्हा (,,)
: अब्दुल रऊफ (,,)
: भबानी आचार्य (,,)

राज्य कमेटी के गठन के बाद तमिलनाडु से अधिक सदस्यों को शामिल किया जाएगा (तमिलनाडु राज्य सम्मेलन आयोजित किया गया था लेकिन कोई कमेटी नहीं बनाई गई है), कश्मीर से एक सदस्य और जम्मू से एक सदस्य, हिमाचल प्रदेश से एक सदस्य और हरियाणा से एक सदस्य है।

राजस्थान और गुजरात को छह महीने के भीतर अपने राज्य सम्मेलनों को पूरा करने के बाद सहयोजित किया जाएगा।

इसके बाद केंद्रीय नियंत्रण आयोग भी पार्टी महासम्मेलन द्वारा गठित किया गया।

अध्यक्षः कॉम. सी. मुथुरामलिंगम (तमिलनाडु)
सदस्यः कॉम. एस.एन. सिंह चौहान (उत्तर प्रदेश)
कॉम. प्रेम सांघी (पश्चिम बंगाल)
कॉम. सुबोध भगत (पश्चिम बंगाल)
एक और सदस्य को बाद में सहयोजित किया जाएगा।

सभी राज्य सम्मेलनों को पूरा करने के बाद बाद में राज्य इकाइयों के परामर्श से राष्ट्रीय परिषद (नेशनल कौंसिल) का गठन करने का भी निर्णय लिया गया।

'हर घर नेताजी'

ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक की 19वीं पार्टी महासम्मेलन ने 'हर घर नेताजी' (हर घर में नेताजी) के लक्ष्य के साथ राजनीतिक दर्शन और नेताजी सुभाष चंद्र बोस के महान योगदान का प्रचार करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी घर–घर अभियान शुरू करने का निर्णय लिया।

ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक मानता है कि ऐसे समय में जब देश का लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता खतरे में है, नेताजी की धर्मनिरपेक्षता की भावना और आजादी के बाद के भारत की परिकल्पना नई पीढ़ी को प्रदान की जानी चाहिए। देश भर में पार्टी कार्यकर्ता और अनुयायी नेताजी सुभाष चंद्र बोस के आदर्शों के बारे में पत्रक और अन्य प्रचार सामग्री के साथ घर–घर अभियान चलाएंगे।

प्रतिनिधि सत्र में हुई चर्चाओं और स्पष्टीकरणों के आधार पर पार्टी महासम्मेलन द्वारा निम्नलिखित निर्णय लिए गए हैं:–

1.पार्टी महासम्मेलन की सिद्धांत–'सुभाषवाद भविष्य है' को लोकप्रिय बनाने के लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू करेगी।

2.पार्टी इकाईयां –'सुभाषवाद भविष्य है' के बैनर तले नेताजी पर डोर–टू–डोर अभियान शुरू करेंगी।

3. पार्टी की सदस्यता बढ़ाने और निचले स्तर की पार्टी इकाईयों को बनाने के लिए पार्टी इकाईयाँ विशेष पहल करेंगी।

4. पार्टी केंद्रीय और अंचल स्तर पर नियमित पार्टी स्कूल आयोजित करेगी।

5. लेवी प्रणाली के संग्रह को सख्ती से सुव्यवस्थित किया जाएगा।

6. जहां–जहां नहीं हुआ वहां–वहां राज्य सम्मेलन ठीक से आयोजित किए जाएंगे।

7.पार्टी 21 अक्टूबर 2023 को लाल किले, दिल्ली में क्षेत्रीय यात्राओं / अभियान / डोर–टू–डोर अभियान / –'सुभाषवाद भविष्य है' आदि के समापन कार्यक्रम के रूप में विशेष कार्यक्रम आयोजित करेगी।

8. पार्टी दुनिया भर में और अधिक समाजवादी आंदोलनों के साथ संपर्क बनाने का प्रयास करेगी।

9. पार्टी राष्ट्रीय स्तर पर वाम–लोकतांत्रिक–धर्मनिरपेक्ष ताकतों का संयुक्त मंच बनाने की संभावना तलाशने का प्रयास करेगी।

10. 'सुभाषवाद' और अन्य समकालीन राजनीतिक मुद्दों पर अधिक साहित्य नियमित रूप से प्रकाशित किया जाएगा।

11. पार्टी महंगाई, बेरोजगारी, अशिक्षा, खराब स्वास्थ्य, किसानों, मजदूरों और आदिवासियों के मुद्दों के खिलाफ देश भर में जन आंदोलन आयोजित करेगी।

वाम, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक एकता फॉरवर्ड ब्लॉक पार्टी महासम्मेलन की मांग

ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक की 19वीं पार्टी महासम्मेलन ने सांप्रदायिक और विभाजनकारी शासक गुट के खिलाफ वाम–धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक एकता का एक स्वर से आह्वान किया। पार्टी महासम्मेलन के विशेष सत्र को संबोधित करते हुए माकपा, भाकपा, आरएसपी और भाकपा (माले) के नेताओं ने कहा कि केंद्र सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ एकजुट कार्रवाई को मजबूत करने का समय आ गया है।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के पोलित ब्यूरो सदस्य और पूर्व सांसद कॉम. सुभाषिनी अली द्वारा दिये गये भाषण का पाठ नीचे दिया गया है:

ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक की 19वें पार्टी महासम्मेलन को बधाई संदेश!

प्रेसीडियम के कॉमरेड, महासचिव देवव्रत विश्वास, प्रतिनिधि और अतिथिगण!

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की केंद्रीय समिति की ओर से, मैं ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक की 19वें पार्टी महासम्मेलन में भाग लेने वाले सभी प्रतिनिधियों को हार्दिक बधाई देता हूं।

यह पार्टी महासम्मेलन भारत के राजनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर आयोजित किया जा रहा है। आजादी के 75 साल बाद भी देश में एक ऐसा शासन चल रहा है, जो आक्रामक रूप से आरएसएस के फॉसीवादी हिंदुत्व के एजेंडे को आगे बढ़ा रहा है। मोदी सरकार के लगभग नौ वर्षों में विनाशकारी नव–उदारवादी नीतियों का अनुसरण, अडानी–शैली के घोर पूंजीवाद को बढ़ावा और राष्ट्रीय संपत्ति की लूट भी देखी गई है। हिंदुत्व–कॉरपोरेट गठजोड़ के परिणामस्वरूप बढ़ते फॉसीवादी हमलों द्वारा चिह्नित एक पूर्ण अधिनायकवाद लागू हो गया है।

आरएसएस का एजेंडा है हिंदुत्व राष्ट्र बनाना। इसे पूरा करने के लिए मोदी सरकार धर्मनिरपेक्ष–लोकतांत्रिक संविधान की नींव को कमजोर कर रही है। संविधान के तहत तमाम संस्थाओं को भीतर से ही तोड़ने की कोशिश की जा रही है।

2019 के लोकसभा चुनाव में मोदी सरकार के दोबारा सत्ता में आने के बाद संविधान और लोकतांत्रिक अधिकारों पर हमले तेज हो गए थे। अनुच्छेद 370 को निरस्त करना और जम्मू–कश्मीर राज्य को खत्म करना, नागरिकता (संशोधन) अधिनियम का पारित होना, सभी ने संविधान और नागरिकों के अधिकारों पर एक तीव्र हमले की शुरुआत को चिह्नित किया।

इस अवधि में कॉरपोरेट–समर्थक और श्रमिक वर्ग विरोधी नीतियों का अधिक बेशर्मी से अनुसरण देखा गया। मोदी सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के बड़े पैमाने पर निजीकरण की शुरुआत की है और बड़े व्यवसायों के लिए अधिक रियायतें दी हैं। श्रमिक वर्ग को महत्वपूर्ण अधिकारों से वंचित करने वाली चार श्रम संहिताएँ अधिनियमित की गई। अब रद्द किए जा चुके तीन कृषि कानूनों को भी कॉरपोरेट्स को कृषि क्षेत्र में प्रवेश करने में मदद करने के लिए डिजाइन किया गया था।

तथाकथित राष्ट्रवादी हिंदुत्व ताकतें सबसे सुसंगत साम्राज्यवादी समर्थक ताकतें भी साबित हुई हैं। मोदी सरकार संयुक्त राज्य अमेरिका के एक रणनीतिक और राजनीतिक सहयोगी के रूप में उभरी है जिसमें एक सैन्य गठबंधन और क्वाड का सदस्य बन गया है।

कॉरपोरेट–समर्थक, पूंजीवाद उन्मूख आर्थिक नीतियों के परिणाम स्वरूप लोगों के रहन–सहन के स्तर में लगातार गिरावट है। कोविड महामारी की पीड़ा के बाद, लोग उच्च बेरोजगारी, निरंतर मुद्रास्फीति और बढ़ती कीमतों और कृषि संकट के प्रभावों से पीड़ित हैं। मोदी सरकार के संवेदनहीन रवैये को हालिया बजट प्रस्तावों से देखा जा सकता है, जिसमें मनरेगा के लिए आवंटन पिछले वर्ष खर्च की गई राशि से 33 प्रतिशत कम कर दिया गया है।

हिंदुत्व शासन का मतलब अल्पसंख्यकों पर लगातार हमले हो रहे हैं और उन्हें नागरिकों के मूल अधिकारों से वंचित किया जा रहा है, खासकर भाजपा शासित राज्यों में। गोहत्या विरोधी कानून, धर्मांतरण के खिलाफ कानून तथाकथित 'लव जिहाद' और बुलडोजर राजनीति का इस्तेमाल भाजपा शासित राज्यों में मुसलमानों को निशाना बनाने के लिए किया जाता है। प्रशासन और पुलिस की मिलीभगत से अक्सर हिंदुत्ववादी समूह अल्पसंख्यक समुदायों पर हमले करते हैं।

प्रतिगामी मनुवादी विचारधारा पितृसत्तात्मक, सांप्रदायिक और जातिवादी प्रथाओं को बढ़ावा देती है, जिसके कारण महिलाएं बढ़ते उत्पीड़न और यौन हमलों का शिकार होती हैं। दलित और आदिवासी भी इस हिंदुत्व दृष्टिकोण के शिकार हैं।

हिंदुत्ववादी ताकतों ने खुद को 'राष्ट्रवादी' के रूप में पेश करने की कोशिश की है, जो उनका विरोध करते हैं, उन सभी को राष्ट्र–विरोधी कहते हैं। उनका दावा विरोधाभासी है क्योंकि आरएसएस और हिंदू महासभा दोनों ने सक्रिय रूप से राष्ट्रीय आंदोलन का विरोध किया। स्वाभाविक रूप से, उनके रैंकों में एक भी स्वतंत्रता सेनानी नहीं पाया जाता है। नतीजतन, वे राष्ट्रीय आंदोलन के उपयुक्त नेताओं को अपने साथ दिखाने का प्रयास कर रहे हैं। चूँकि नेताजी, सुभाष चंद्र बोस के कांग्रेस के नेताओं के साथ मतभेद थे, प्रधानमंत्री सहित भाजपा नेताओं ने यह दावा करने के लिए जबरदस्त प्रयास किए कि वे ही हैं जो उन्हें उनका हक दे रहे हैं। इसके प्रमाण के रूप में, सरकार ने इंडिया गेट पर नेताजी की मूर्ति स्थापित की है जहाँ एक बार जॉर्ज पंचम की मूर्ति खड़ी थी। भाजपा नेताओं के झूठे दावों का पर्दाफाश होना चाहिए। हिंदू महासभा ने नेताजी की तब आलोचना की जब वे कांग्रेस में थे और तब भी जब उन्होंने इसे छोड़ दिया और 'आजाद हिन्द फौज' का गठन किया।

वास्तव में, सावरकर ने ब्रिटिश सेना के लिए ऐसे समय में सैनिकों की भर्ती की जब आईएनए अंग्रेजों के खिलाफ एक जबर्दस्त लड़ाई लड़ रहा था। यह नेताजी की धर्मनिरपेक्षता के प्रति दृढ़ और अटल प्रतिबद्धता थी जिसने उन्हें हिंदू महासभा के लिए सबसे अधिक अप्रिय बना दिया और उन्होंने खुद महासभा और इसकी विचारधारा के प्रति अपने कठोर विरोध पर कायम थे। उनके झूठे राष्ट्रवाद को उजागर करना भाजपा और संघ परिवार की नीतियों और कार्यों के खिलाफ हमारे अभियानों का हिस्सा होना चाहिए।

भारत में वामपंथी और जनवादी ताकतों के सामने चुनौती यह है कि हिंदुत्व–कॉरपोरेट गठजोड़ का मुकाबला कैसे किया जाए और नव–उदारवादी नीतियों के हमलों के खिलाफ लड़ने के लिए मेहनतकश जनता के सभी वर्गों को लामबंद किया जाए और साथ ही हिंदुत्व–सांप्रदायिक ताकतों के खिलाफ संघर्ष भी खड़ा किया जाए।

मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल के दौरान, मेहनतकश जनता के विभिन्न वर्गों पर मोदी सरकार द्वारा शुरू किए गए हमलों का विरोध बढ़ रहा है। सीएए विरोधी आंदोलन संविधान और नागरिकता

शेष पेज 7 पर...

वाम, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक एकता...

पेज 6 से जारी...

के विध्वंस के खिलाफ एक बड़े विरोध के रूप में विकसित हुआय किसानों का सबसे बड़ा और सबसे लंबा संघर्ष तीन कृषि कानूनों को रद्द करने के साथ ऐतिहासिक जीत में समाप्त हुआ। मजदूर वर्ग आम हड़तालों और क्षेत्रीय संघर्षों की एक श्रृंखला के माध्यम से नए श्रम संहिताओं और निजीकरण अभियान के खिलाफ लगातार विरोध कर रहा है। वाम दल इन विभिन्न संघर्षों का नेतृत्व करने और उनमें भाग लेने में सक्रिय रहे हैं।

अब आवश्यकता इस बात की है कि जनता के विभिन्न तबकों की व्यापक एकता और एकजुट मंचों पर आधारित अधिक शक्तिशाली संघर्षों का निर्माण किया जाए। वैचारिक रूप से हिंदुत्व के आक्रमण का मुकाबला करने और सभी लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष ताकतों को एकजुट करने के लिए साधन प्रदान करने में भी वामपंथ की महत्वपूर्ण भूमिका है।

यह स्थिति वामपंथ को मजबूत करने की मांग करती है। दक्षिणपंथी हिंदुत्व आक्रमण के खिलाफ एक प्रभावी लड़ाई के लिए एक मजबूत और एकजुट वामपंथ आवश्यक है। सभी लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष ताकतों की एकता का निर्माण भाजपा को हराने और अलग–थलग करने की सफल लड़ाई का मार्ग प्रशस्त करेगा।

हमें उम्मीद है कि आपकी महासम्मेलन वाम एकता को मजबूत करने, एक प्रभावी वामपंथी और लोकतांत्रिक विकल्प तैयार करने और हिंदुत्व शासन के खिलाफ सभी लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष ताकतों की व्यापक एकता बनाने के बारे में क्रियाशील होगा।

इस विचार–विमर्श में हम महासम्मेलन की सफलता की कामना करते हैं और एक बार फिर अपनी बिरादराना भावनाओं से हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

केंद्रीय समिति

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी)

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव डा. के. नारायणा ने भाकपा की ओर से ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक के 19वें पार्टी महासम्मेलन में शामिल सभी प्रतिनिधियों को क्रांतिकारी बधाई संदेश देते हुए कहा कि:

आपकी पार्टी महासम्मेलन विश्व इतिहास के एक गंभीर समय में होने के कारण खास महत्व रखती है। हमें मानवता के सामने खड़े अभूतपूर्व संकट को संबोधित करने की जरूरत है। अंतरराष्ट्रीय सामाजिक– आर्थिक– राजनीतिक परिदृश्य पर पूंजीवादी लोभ और साम्राज्यवाद शक्ति की भूख हावी हो रही है। साम्राज्यवाद का यंत्र पासीवाद फिर से अपनी जड़े गहराने की कोशिश कर रहा है। वैश्विक शांति जोखिम है। सामाजिक न्याय के सिद्धांत संकट में हैं। राष्ट्रीय संप्रभुताएं पूंजीवादी एकीकरण की प्रक्रिया में जोखिम में है और नष्ट हो रही हैं। पर्यावरणीय नुकसान के खतरनाक प्रभाव सामने आ रहे हैं। दुनिया एक खतरनाक चौराहे पर है।

हैदराबाद में आपकी कांग्रेस एक ऐसे समय में हो रही है जब विचारों में अति विभाजन जोरों पर हैं और कोई भी महाद्वीप युद्ध या इसके परिणामों से सुरक्षित नहीं है।

वस्तुओं की कमी मूल्य वृद्धि और अत्याधिक असमानताओं के कारण अधिकांश जनता का जीवन कठिन हो रहा है। बलात निष्कासन, राष्ट्रीय संसाधनों का विध्वसं और आवास क्षति ने पूरी तरह लोगों का जीवन नरकीय बना दिया है। कोविड–19 महामारी ने सभी के समक्ष यह उजागर कर दिया है कि दुनिया भर में किस तरह से वर्ग विभाजन बढ़ गया है। जबकि कुछ एकाधिकारवादियों ने अरबों इकट्ठे कर लिए हैं। दसियों लाख लोगों ने अपनी आजीविका खो दी और घोर गरीबी से घिर गए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार लगभग 7000 लाख अल्पपोषितों की संख्या बढ़ सकती है और दुनिया का 3.3 बिलियन कार्यबल प्रभावित हो सकता है। इन घटनाओं ने नवउदारवाद के तहत विकास की कटु वास्तविकता को उजागर कर दिया है।

साथियों, साम्राज्यवाद अपनी जड़ें जमाने के लिए बेताब है। नवउदार आर्थिक नीतियों के खिलाफ जन आंदोलनों के उभार, जनतंत्र के लिए संघर्ष, नस्लवाद के खिलाफ विरोधियों ने साम्राज्यवाद के क्रूर तंत्र का खुलासा कर दिया है। अमरीकी साम्राज्यवाद का अफगानिस्तान में नुकसान, सीआईए की कजाखिस्तान और क्यूबा में तख्तापलट की असफलता, नाटो और यूरोपीय सहयोगी की धमकियों के बावजूद रूस और यूक्रेन के बीच लगातार युद्ध से अमरीकी साम्राज्यवाद साफतौर से असफल हो रहा है। यूरोप में लगातार चलते द्वन्द्व ने अमरीकी नेतृत्व में साम्राज्यवादियों की लामबंदी में नाटो युद्ध–मशीनरी के अति दुष्ट एजेंडे को उजागर कर दिया है। फिलिस्तीनी और उसकी जनता पर लगातार कब्जा और जारी हमले की भर्त्सना करने के साथ–साथ पूर्वी जेरूस्लम का फिलस्तीन की राजधानी और फिलीस्तीनी राज्य की 1967 की सीमा का समर्थन करना चाहिए।

सभी स्थानों पर तनाव को रोकना चाहिए चूंकि द्वन्द्व काफी तेजी से बढ़ सकता है और इसके कारण अविचरित दुर्दशा न केवल उस स्थान की जनता के लिए बल्कि पूरे विश्व के लिए हो सकती है।

साथियों, दक्षिण अमरीका ने एक अभूतपूर्व चुनौती अमरीकी वर्चस्व के सामने रखी है। दक्षिण अमरीका में दूसरी वामपंथी प्रगतिशील लहर भू–राजनीतिक हवा की दिशा बदल रही है। बोलीवारियन क्रांति ने अमरीकी साम्राज्यवाद की उस प्रतिक्रांति चालों का प्रतिरोध किया है जो कि आर्थिक प्रतिबंधों जनप्रिय सरकारों को गिराने और हाइब्रिड युद्धों में संलग्न है। बोलिवियनों ने अमरीका समर्पित सत्ता पलट के खिलाफ आम चुनावों के माध्यम से अमरीकी साम्राज्यवाद का विरोध किया है। दक्षिण अमरीका के सबसे बड़े जनतांत्रिक देश ने हाल के चुनावों में अमरीका की कठपुतली सरकार बैठाने के विरोध में लूला द सिलवा को राष्ट्रपति के रूप में चुना है। ब्राजील की क्रांतिकारी जनता को बधाई।

साम्राज्यवाद रूपी जख्मी चीता ज्यादा खतरनाक है। विडम्बना से कमजोर साम्राज्यवाद विनाश के ज्यादा खतरनाक चरण में पहुंच गया है। साम्राज्यवाद अपने गिरते आर्थिक दबदबे को बढ़ाने और दुनिया भर में अपनी सैन्य शक्ति को मजबूत करने की कोशिश कर रहा है। साम्राज्यवादी युद्ध मशीनें अप्रत्याशित रूप से दिन–रात काम में लगी हुई हैं।

साथियों, 2008 के वैश्विक वित्तीय पिघलन के बाद से उजागर हो गया है कि पूंजीवाद जनता के जीवन को बेहतर नहीं बना सकता। इस वित्तीय संकट के बाद से बेरोजगारी और असमानता पहले से ज्यादा स्पष्ट दिखने लगी है। तिस पर भी कुछ एक अपवादों को छोड़कर नवउदार पूंजीवाद द्वारा खड़ी की गई चिन्ताओं और इसकी असफलताओं को साधने में प्रगतिशील ताकतें असफल रही हैं। इस कारण कई देशों में दक्षिणपंथी ताकतों को एकजुट होने और एक राजनीतिक ताकत के रूप में उभरने में मदद मिली।

दक्षिणपंथ ने विदेशी लोगों के प्रति डर, साम्राज्यवाद, नस्लवाद, और जातीय युद्धों को बढ़ावा दिया है जनता को बांट कर रखने के लिए। अति राष्ट्रवाद और कट्टरवाद दिन प्रति दिन घिनौना रूप ले रहे हैं और लोगों के बीच नफरत की दीवार खड़ी कर रहे हैं।

इस वैश्विक संदर्भ में एआईएफबी की 19वें महासम्मेलन भारत के राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण है।

साथियों, वैश्विक उदारवाद के परिदृश्य में साम्राज्यवाद उत्प्रेरित पूंजीवाद की आर्थिक दलदल में भारत भी फंस गया है। दूसरी बार भाजपा–आरएसएस नीत राजग शक्तियों ने उपमहाद्वीप पर फासीवाद की पकड़ को मजबूत बना दिया है।

फिर भी इस अलग तरह के फासीवाद को जर्मनी, इटली, स्पेन में भोगे गए फासीवाद के पूर्ण समकक्ष नहीं समझना चाहिए। यह भारतीय किस्म का फासीवाद है जहां उत्पादन के पिछड़े संबंधों से उभरी प्रतिगामी विचारधाराओं का मिलन साम्राज्यवाद समर्थित सट्टेबाज पूंजी के बीच है।

यूपीए दो की सरकार के परास्त के बाद से नरेन्द्र मोदी नीत राजग सरकार इस फासीवादी मत समर्थक है।

शेष पेज 8 पर...

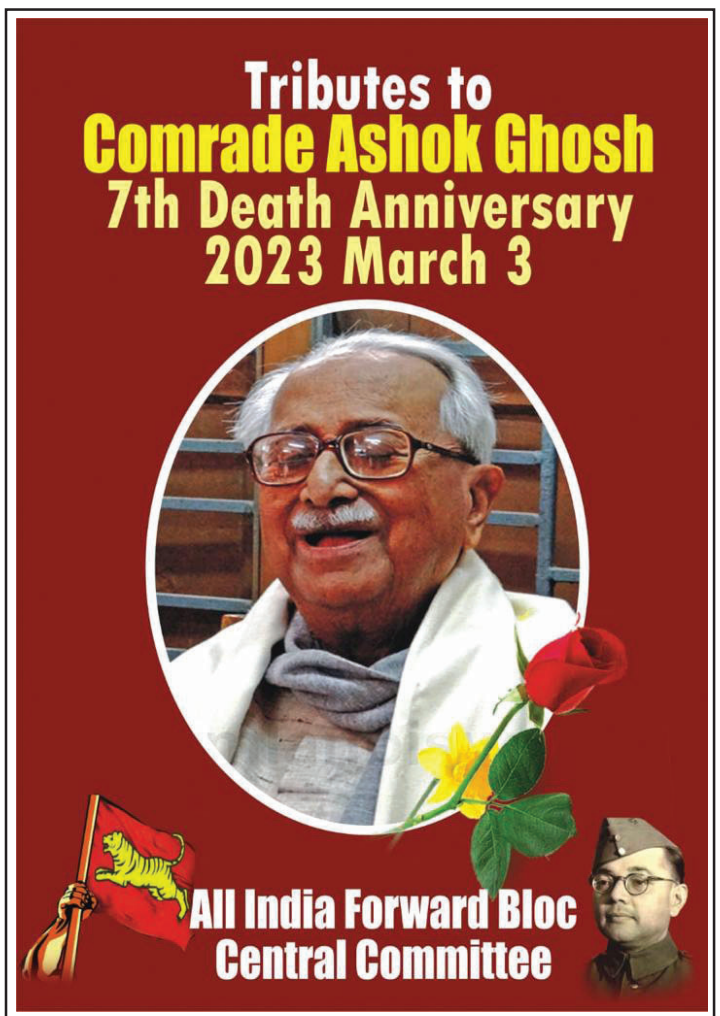

एआईएफबी पार्टी इकाइयों द्वारा प्रिय कॉमरेड अशोक घोष की 7वीं पुण्यतिथि देश भर में मनाई गई। सुइसा आश्रम, पुरुलिया में उनके नश्वर शरीर के विश्राम स्थल पर विशेष समारोह आयोजित किए गए।

RNI No.43038/1985 Postal Reg. No.: DL(C)-14/1434/2021-23 Total Page 8 Posted at : SPM, SRT Nagar PO, New Delhi-110055
Hindi Monthly Published on 25-3-2023 Posting Date: 28 & 29 of the Same Month

वाम, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक एकता...

पेज 7 से जारी...

आज मोदी सरकार पूर्ण रूप से रिलायंस और अडानी समूह जैसे क्रोनी पूंजीवाद के कॉर्पोरेट निर्देशों के सामने मोदी सरकार ने पूरी तरह घुटने टेक दिए हैं यह सरकार सभी लाभ कमाने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों को बेचने में लगी है और इस तरह हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी को तोड़ रहे हैं।

लगता है कि मोदी शाह जोड़ी ने पहले ही निर्णय ले लिया है देश की आर्थिक संप्रभुता को कार्पोरेटों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को लीज पर बेचने के लिए, देश की आजादी के साथ समझौता करने के लिए।

भाजपा सरकार इस तरह से न केवल देश की आर्थिक संप्रभुता, संघीय ढांचे को तोड़ने में लगी है बल्कि लोगों के बीच भाई–चारे–सांस्कृतिक एकता को भी तोड़ रही है। इसने अंग्रेजों की औपनिवेशिक सरकार द्वारा अपने हितों की पूर्ति के लिए शुरू की गई बांटो और राज करो की राजनीति को अपना लिया है। इस भाजपा–आरएसएस फासीवादी के दो श्रद्धेय सावरकर और श्यामा प्रसाद मुखर्जी खुले रूप से ब्रिटिश सरकार के पिट्ठू थे। इसलिए उन्होंने सावरकर के साम्प्रदाय विभाजन के दो राष्ट्रों के सिद्धांतों को पुर्नजीवित किया और निपुणता से देश के धर्मनिरपेक्ष ताने–बाने को चीर रहे हैं।

लेकिन जब से जनविरोधी घोषणाओं और नीतियों का व्यापक जन प्रतिरोध हो रहा है तब से सरकार ने भारत के संविधान से मिले भारतीय नागरिकों के मूलभूत अधिकारों को कुचलना शुरू कर दिया है। सरकार ने प्रतिरोध की आवाज को कुचलने के लिए कई कठोर कानूनों को लागू किया है।

साथियों, आपका 19वें महासम्मेलन का प्रस्ताव मसौदा इस परिस्थिति का ठीक आंकलन करता है, लेकिन यह काफी नहीं है। सवाल यह है कि किस तरह से इन फासीवादी ताकतों को हटाएं और हमारी धर्मनिरपेक्ष, जनतांत्रिक राजनीति को बचाएं।

हाल ही में विजयवाड़ा में आयोजित भाकपा की 24वीं पार्टी कांग्रेस ने इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर चर्चा की और इस नतीजे पर पहुंचे कि ''इस संदर्भ में, धर्मनिरपेक्ष, जनतांत्रिक और वामपंथी ताकतों के व्यापक गठबंधन निर्माण की तत्काल आवश्यकता है केन्द्र और राज्य में भाजपा शासन के विकल्प के धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक विकल्प विकसित करने के लिए।''

एक लक्ष्य को हासिल करने के लिए वामपंथी ताकतों का एकजुटता के साथ आगे बढ़ने के साथ–साथ जुझारू सामूहिक कार्यवाहियों का विस्तार महतवपूर्ण है ताकि एक विकल्प स्वरूप सभी जनतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और देशप्रेमी ताकतों को एकजुट किया जा सके और सांप्रदायिक फासीवादी ताकतों को समाज में अपने जहरीले एजेंडे के साथ पैर पसारने और सत्ता में बने रहने से रोका जा सके।

हमें विश्वास है कि ऑल इंडिया फारवर्ड ब्लॉक की 19वीं कांग्रेस गंभीरता के साथ मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य पर चिंतन करेगी और ठोस विचारों, योजनाओं के निष्कर्षों पर पहुंचेगी जो कि आखिरकार व्यापक धर्मनिरपेक्ष, वाम गठबंधनों के निर्माण को मजबूत करेगा ताकि 2024 के चुनावों में केन्द्र से सांप्रदायिक फासीवादी ताकतों को हटाया जा सके।

एक बार फिर से मैं ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक की 19वें महासम्मेलन की पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

(अन्य वामपंथी दलों और बिरादराना विदेशी के प्रतिनिधियों के समाजवादी संदेश आगामी अंकों में प्रकाशित होंगे–संपादक)

जन गर्जन हिन्दी मासिक ऑल इण्डिया फारवर्ड ब्लाक की केन्द्रीय समिति के लिए देवब्रत बिश्वास, पूर्व सांसद सदस्य द्वारा टी–2235/2, अशोक नगर, फैज रोड़, करोल बाग, नई दिल्ली–110005 से मुद्रित तथा प्रकाशित। दूरभाष : 28754273
संपादक : देवब्रत बिश्वास, पूर्व सांसद
मुद्रण स्थल : कुमार ओफसेट प्रिंटर्स, 381, पटपड़ गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली 110092 वेबसाईट: www.forwardbloc.org
ईमेल:biswasd.aifb@yahoo.co.in
कम्प्यूटर कम्पोजिंग : प्रकाशन विभाग, केन्द्रीय कार्यालय, ऑल इण्डिया फारवर्ड ब्लाक, नेताजी भवन, नई दिल्ली

जन गर्जन
नेताजी भवन,
टी–2235/2, अशोक नगर, फैज रोड़,
करोल बाग, नई दिल्ली–110005
दूरभाष: 011–28754273

जन गर्जन
ऑल इण्डिया फारवर्ड ब्लॉक का हिन्दी मासिक

सेवा में,